हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक

श्रीगुरुमाई के जन्मदिन महोत्सव का वृत्तान्त

२४ जून, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

भाग १

उषाकाल की पूजा

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

श्री मुक्तानन्द आश्रम में, भोर की गहन निश्चलता में, वृक्षों के शिखर पर गहरा कोहरा छाया हुआ था। चन्द्रमा, जो कि पूर्णता की ओर बढ़ रहा था और अट्ठासी प्रतिशत पूर्ण हो चुका था, प्रातः ३ बजे अस्त हुआ। पूर्वी क्षितिज पर एक मृदुल, रजत प्रकाश छिटका हुआ था और हवा में खुशनुमा ठण्डक थी। सुबह के पहले पंछी सन्देशवाहक के रूप में शीघ्र ही होने वाले सूर्योदय की घोषणा कर रहे थे, उनके प्रेम-गीत प्रकृति को अलंकृत कर रहे थे।

भारत में, भोर के समय को ब्रह्ममुहूर्त कहा जाता है, सृष्टिकर्ता "ब्रह्मा जी का समय।" शास्त्रों में कहा गया है कि पूजा करने का यह सबसे शुभ समय होता है। मन्दिरों में पुजारी और भक्तगण पूजा की तैयारी करते हैं — आरती की थालियों को साफ़ कर, अगरबत्ती जला कर, ताज़े फूलों को इकट्ठा कर व उनकी माला बना कर। वे पावन व मनोरम वातावरण का निर्माण करते हैं। जल्दी ही और भी भक्त मन्दिरों में आने लगते हैं। वे बड़ी प्रत्याशा से, पावन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पुजारीगण को गर्भगृह के पट खोलते हुए देखते हैं। किसी भी क्षण इष्टदेव की प्रथम दृष्टि उन पर पड़ेगी!

इस प्रकार, जब इष्टदेव एक नए दिन अपनी आँखें खोलते हैं, सुबह जागते हैं तो सभी लोग इसमें भाग लेते हैं और इष्टदेव की कृपा और उनके आशीष प्राप्त करते हैं। सुबह-सवेरे के मौन में जब घण्टियाँ

बजती हैं और शंखनाद होता है, जब मन्त्रों की ध्वनि वातावरण में प्रवाहित होने लगती है तो भक्त इसकी अनुभूति कर सकते हैं : विश्व का आलोड़न, एक बार फिर से अस्तित्व में आने के लिए।

इस वैभवशाली दिन, २४ जून को, श्री मुक्तानन्द आश्रम के मन्दिर में बड़े बाबा सुनहरे-पीले परिधान में देदीप्यमान थे। वे श्वेत कुमुद और केसरी गुलाब के फूलों की माला पहने हुए थे, और गहरे लाल रंग के मोतियों की कई लड़ों की एक भव्य माला उनके परिधान पर सज रही थी — माणिक्य और सुनहरे रंगों का एक चित्ताकर्षक मेल।

बड़े बाबा के आसीन होने का स्थान, माणिक्य व अन्य अनेक मनमोहक रंगों के गुलाबों के साथ-साथ मोगरा व गार्डीनिया के फूलों से सजा था। ऐसा दृश्य देख पाना, ऐसे सौन्दर्य की प्रतीति कर पाना, ऐसे मौन में स्थित हो जाना, ऐसी विपुलता की अन्तर में भी और बाहर भी अनुभूति कर पाना — यह बड़े बाबा के साथ सत्संग का एक क्षण था। यह २०१८ के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश का एक अनुभव था।

एक प्रतिभागी ने बाद में बताया, "जब बड़े बाबा की आरती आरम्भ हुई तो मैंने घण्टियों के शुद्ध नाद को वातावरण में अनुभव किया। तत्काल ही मेरा बोध मेरे हृदय के केन्द्र-बिन्दु पर गया, वह बिन्दु जो कि सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, फिर भी ब्रह्माण्ड के समान व्यापक व शक्तिशाली है।

बड़े बाबा की आरती के कुछ समय बाद ही, श्रीनिलय हॉल में श्रीगुरुगीता का स्वाध्याय हुआ। बाहर, बादलों से ढँके आकाश में, सूर्य देवता बादलों में से झाँकते हुए देखे जा सकते थे।

श्रीगुरुगीता का स्वाध्याय सन् १९७२ से विश्वभर के सिद्धयोग आश्रमों व ध्यान केन्द्रों, और सिद्धयोगियों के घरों व ऑफ़िसों में होता आया है। उस वर्ष गुरुमाई जी के गुरु, बाबा मुक्तानन्द ने इसे पहली बार आश्रम दिनचर्या का एक अंग बनाया। इस पावन स्तोत्र का प्रत्येक श्लोक श्रीगुरु के ज्ञान और प्रकाश को प्रकट करता है और गुरु-शिष्य सम्बन्ध पर प्रकाश डालता है।

इतने वर्षों में श्रीगुरुमाई ने साधकों को सिखाया है कि श्रीगुरुगीता का पाठ करने से पूर्व उन्हें संकल्प बनाना चाहिए। यह एक बहुत ही शक्तिपूरित अभ्यास है। इन मन्त्रों के हर अक्षर में आशीर्वाद निहित हैं। अतः जब लोग इनका पाठ करते हैं तो वे इन आशीर्वादों का आह्वान करते हैं, और उनके बनाए हुए संकल्प फलीभूत होते हैं।

यह समझना आवश्यक है कि जो संकल्प हम बनाते हैं, वे कल्याणकारी होने चाहिए; उनसे सद्भावना को बढ़ावा मिलना चाहिए। ऐसे संकल्प के साथ किए जाने वाले श्रीगुरुगीता के पाठ के अभ्यास से सहस्रों लोगों के जीवन रूपान्तरित हुए हैं, और हो रहे हैं; उनका उत्थान हुआ है।

२४ जून, इस मंगलमय दिन पर समस्त प्रतिभागियों ने अवश्य ही गुरुमाई जी के लिए यह संकल्प किया होगा कि उनका जन्मदिन सर्वश्रेष्ठ हो। सच में — सर्वोत्कृष्ट जन्मदिन! क्योंकि जब वे श्रीगुरुगीता के श्लोक गा रहे थे तो वातावरण में ऐसी मिठास थी जिसे महसूस किया जा सकता था और हर श्लोक के साथ यह मिठास बढ़ रही थी, हवा में छा रही थी। हॉल में, गुरुमाई जी के प्रति निरपेक्ष प्रेम को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जा सकता था।

श्रीगुरुगीता-स्वाध्याय में भाग लेने वाले एक व्यक्ति ने बताया, "सिद्धयोग पथ के पावन स्तोत्र, श्रीगुरुगीता के इन श्लोकों का पाठ करते हुए मेरा हृदय गुरुमाई जी के प्रति और उनकी सिखावनियों के प्रति कृतज्ञता से भर गया जो समस्त सृष्टि में व्याप्त, उसी एक दिव्यता को पहचानने में मेरा मार्गदर्शन करती हैं।"

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

क्रमशः . . .